पढ़क्कू की सूझ

रामधारी सिंह 'दिनकर'

एक पढ़क्कू बड़े तेज थे, तर्क शास्त्र पढ़ते थे
जहाँ न कोई बात, वहाँ भी नई बात गढ़ते थे ।
एक रोज वे पड़े फिक्र में समझ नहीं कुछ पाए,
बैल घूमता है कोल्हू में कैसे बिना चलाए ?
कई दिनों तक रहे सोचते, मालिक बड़ा गजब है ?
सिखा बैल को रक्खा इसने, निश्चय कोई ढब है ।

आखिर, एक रोज मालिक से पूछा उसने ऐसे,
अजी, बिना देखे, लेते तुम जान भेद यह कैसे ?
कोल्हू का यह बैल तुम्हारा चलता या लड़ता है ?
रहता है घूमता, खड़ा हो या पागुर करता है ?

मालिक ने यह कहा, अजी, इसमें क्या बात बड़ी है ?
नहीं देखते क्या, गर्दन में घंटी एक पड़ी है ?
जब तक यह बजती रहती है, मैं न फिक्र करता हूँ,
हाँ, जब बजती नहीं, दौड़कर तनिक पूँछ धरता हूँ ।

कहा पढ़क्कू ने सुनकर, तुम रहे सदा के कोरे !
बेवकूफ ! मंतिख की बातें समझ सकोगे थोड़े !
अगर किसी दिन बैल तुम्हारा सोच-समझ अड़ जाए,
चले नहीं, बस, खड़ा-खड़ा गर्दन को खूब हिलाए ।
घंटी टुन-टुन खूब बजेगी, तुम न पास आओगे,
मगर बूँद भर तेल साँझ तक भी क्या तुम पाओगे ?

मालिक थोड़ा हँसा और बोला कि पढ़क्कू जाओ,
सीखा है यह ज्ञान जहाँ पर, वहीं इसे फैलाओ ।
यहाँ सभी कुछ ठीक-ठाक है, यह केवल माया है,
बैल हमारा नहीं अभी तक मंतिख पढ़ पाया है ।

शब्द-अर्थ

सूझ - बोध या समझने की शक्ति

फिक्र - चिंता

गजब - क्रोध, प्रकोप

बेवकूफ- मूर्ख, नासमझ

कोल्हू - बीजों का तेल या गन्ने का रस निकालने का यंत्र ।

पागुर - जुगाली, सींग वाले चौपायों का वह चर्या जिसमें वे निगले हुए चारे को गले से थोड़ा-थोड़ा निकाल कर फिर से चबाते हैं ।

ढब - ढंग, रीति

अभ्यास

भाव- बोध :

१. इस कविता में एक कहानी कही गई है । इस कहानी को तुम अपने शब्दों में लिखो ।

२. पढ़क्कू कौन-सा शास्त्र पढ़ते थे ?

३. बिना चलाए कोल्हू का बैल कहाँ चलता रहता था ?

४. कोल्हू में चलते समय बैल क्या करता था ?

५. घंटी न बजने से मालिक क्या करता था ?

६. मालिक और पढ़क्कू में से कौन ज्यादा समझदार था, बताओ ।

भाषा-बोध :

मुहावरे :

'कोल्हू का बैल' ऐसे व्यक्ति को कहते हैं जो कड़ी मेहनत करता है या जिससे कड़ी मेहनत करवाई जाती है । मेहनत और कोशिश से जुड़े कुछ और मुहावरे नीचे लिखे गए हैं। इनका वाक्य में प्रयोग करो ।

- दिन रात एक करना
- पसीना बहाना

गढ़ना

पढ़क्कू नई-नई बातें गढ़ते थे ।

बताओ, ये लोग क्या गढ़ते हैं ?

लुहार.....

ठठेरा.....

कुम्हार.....

लेखक.....

कवि.....

सुनार.....

अपना तरीका :

हाँ जब बजती-नहीं, दौड़कर तनिक पूँछ धरता हूँ

'पूँछ धरता हूँ' का मतलब है– पूँछ पकड़ लेता हूँ।

नीचे लिखे वाक्यों को अपने शब्दों में लिखो :

(क) बैल हमारा नहीं अभी तक मंतिख पढ़ पाया है ।

(ख) जहाँ न कोई बात, वहाँ भी नई बात गढ़ते थे ।

(ग) मगर बूँद भर तेल साँझ तक भी क्या तुम पाओगे

अनुभव विस्तार :

१. तुम पढक्कू जैसी एक कविता लिखकर सब को सुनाओ ।

२. तुम कौन-सा काम खूब मन से करना चाहते हो ?

उसके आधार पर पढ़क्कू जैसे कोई शब्द सोचो ।